वेदोऽखिलोधर्ममूलम्

ऋग्वेद
यजुर्वेद
सामवेद
अथर्ववेद

वेद प्रकाश

मासिक पत्र (6-7 प्रतिमाह) मूल्यः ५ रुपये (३०/-वार्षिक) जुलाई २०१७

कुल पृष्ठ संख्या २०, वजनः 40 ग्राम
प्रकाशन तिथिः 4 जुलाई 2017

अन्तःपथ

पुनर्जन्म सभी द्वारा मान्य है –*महात्मा चैतन्यमुनि*	३ से १०
आर्यावर्त का वह आर्यवीर –*प्रियवीर हेमाइना*	१० से १४
मातृभूमि की रक्षा के लिए प्राण दिये ही नहीं, लिए भी जाते हैं	१४ से १७
मनुस्मृति और नारी जाति –*डॉ. विवेक आर्य*	१७ से १८

एक ही दिन में बिगड़ने वाले दूध में कभी नहीं बिगड़ने वाला घी छिपा है। इसी तरह आपका मन भी अथाह शक्तियों से भरा है, उसमें कुछ सकारात्मक विचार डालो, अपने आप को मथो अर्थात् चिन्तन करो, अपने जीवन को और तपाओ और तब देखना आप कभी हार नहीं मानने वाले सदाबहार व्यक्ति बन जाओगे।

सत्यार्थ प्रकाश और समझदार जाट

सन् 1925 की बात है–ब्रिटिश अधिकारी मेटकाफ ने एक पादरी को नियुक्त किया। भारत के लोगों को इसाई बनाने के लिए। आगे का दृश्य:–

हरियाणा का एक गाँव एक भारतीय ईसाई पादरी जिसे उसके चमचे फादर-फादर कह रहे थे। वह गाँव वालों को बता रहा था कि यीशु (ईसा मसीह) ही God/खुदा का एकमात्र बेटा है। उसकी शरण में आओ। तुम्हारे सारे दु:ख दर्द दूर हो जाएंगे। ईसाई बनते ही तुम्हारे लिए स्वर्ग का दरवाजा खुल जाएगा। क्योंकि केवल यीशु की गवाही पर ही स्वर्ग में प्रवेश मिलेगा। बात भी ठीक थी। ब्रिटिश अधिकारी ही नहीं काले अंग्रेज (भारतीय अधिकारी) भी गरीब दलित हिन्दुओं से बेगार (बिना मूल्य दिए काम लेना) लेते थे। ईसाई बनते ही उनसे बेगार लेनी बंद हो जाती थी।

एक बुजुर्ग जाट खड़ा हुआ। उसने सत्यार्थ प्रकाश पढ़ा था और आर्यसमाज से जुड़ा हुआ था। उसने पादरी से पूछा, "क्या खुदा जिन्दा है या मर गया?"

पादरी ने कहा कि खुदा जिन्दा है। तब उस बुजुर्ग ने कहा कि हमारे यहाँ जब तक बाप जिन्दा हो तब तक बेटे को चौधरी की पगड़ी नहीं बाँधी जाती।

जिस दिन खुदा मर जाए उस दिन आना। उस दिन फैंसला करेंगे। तब तक हम अपने भगवान को ही मानेंगे। राम राम।

पादरी के पास चौधरी के तर्क का कोई उत्तर नहीं था। वह चुपचाप चला गया। स्वामी दयानन्द और सत्यार्थ प्रकाश की फिर से एक बार विजय हुई।

कुछ महत्त्वपूर्ण प्रकाशन

क्या है आपके जीवन की सच्चाई?

(जानिए एक माँ के पत्रों द्वारा)

सुश्री कंचन आर्या — मूल्य 60.00

राम कौन हैं? रामायण क्या है?

श्री गन्नु कृष्णमूर्ति — मूल्य: 150.00

ऋषि हृदयम्

(कुछ अनसुलझे वेद मेंत्रों का अंतरार्थ)

श्री गन्नु कृष्णमूर्ति — मूल्य: 50.00

वेदप्रकाश

वेदप्रकाश

संस्थापक : **स्वर्गीय श्री गोविन्दराम हासानन्द**

वर्ष ६६ अंक १२ वार्षिक मूल्य : तीस रुपये, एक प्रति ५ रुपये, जुलाई, २०१७

सम्पा० **अजयकुमार** पूर्व सम्पादक : स्व० **स्वामी जगदीश्वरानन्द सरस्वती**

पुनर्जन्म सभी द्वारा मान्य है

—महात्मा चैतन्यमुनि

भारतीय मनीषियों तथा शास्त्रों ने तो एकमत से पुनर्जन्म के सिद्धान्त को माना ही है मगर पाश्चात्य जगत् के दार्शनिकों और साहित्यकारों ने भी इसे अपनी सहमति प्रदान की है। इटली के विद्वान् स्पीनोजा, जार्डेनोब्रूनो और कैम्पैनेला ने इसका समर्थन किया है। शौपनहार, लेंसिग, हेगेल, लीबनीज़, हर्डर, फिकटे आदि विद्वानों ने भी इसकी हिमायत की है। मानव जाति की उत्पत्ति के सम्बन्ध में लिखे हुए कान्ट और शेलिंग के ग्रन्थों में इसका विधान किया गया है। प्लेटो का प्रत्ययवाद भी इस बात का साक्षी है कि 'आत्मा शरीर से पुराना है।' इसके मत में आत्मा इस जन्म में जो भी ज्ञान प्राप्त करता है वस्तुत: वह पूर्वजन्मों के अनुभवों की आवृत्तिमात्र है। प्लेटो का यह भी कथन है कि आत्मा अपना चोला सदा बदलता रहता है और आत्मा में बार-बार जन्म लेने की स्वाभाविक शक्ति विद्यमान है। एक अन्य स्थान पर प्लेटो ने पुनर्जन्म के बारे में कहा है—'कायर पुरुष स्त्रियां बनती हैं। अहंकारी व तुच्छ पुरुष पक्षी, अज्ञानी पुरुष जंगली जन्तु बनते हैं। व्यभिचारी पुरुष जल के कीड़े एवं जो अनियमित जीवन बिताते हैं, वे पशु बनते हैं...आदि।' प्लेटो के अनुसार—'आत्मा द्रव्य होने से अविनाशी है।' प्लेटो का यह भी कहना है कि हमारा ज्ञान केवल स्मृति है। इस जन्म में नवीन-ज्ञान प्राप्त करने का अभिप्राय केवल पूर्वजन्म में अनुभव किए हुए संस्कारों को फिर से जागृत करना है।

प्लेटो के अनुयायियों ने यहूदियों के सदृश, आत्मा के मनुष्य शरीर में पुन: आने की पुष्टि में अनेक युक्तियां दी हैं—हैनरी मोर, कडवर्थ और ह्यूम ने भी जीवात्मा की अमरता को प्रमाणित करते हुए (पुनर्जन्म) का समर्थन किया है। प्राचीन युनान के विचारकों में से सुकरात, अफलातून और मिश्र तथा पारसी मत के अनेक विद्वानों ने भी इसका समर्थन किया है। अरस्तु की मान्यता है कि 'आत्मा नित्य और भौतिक शरीर से भिन्न है। वह समस्त जगत् का छायाचित्र है, पशु, कीट, वनस्पति, मनुष्य आदि योनियों में से गुजरकर उस-उस योनि का अनुभव एकत्र करता जाता है।' प्रसिद्ध दार्शनिक काण्ट ने अपने समस्त दर्शन शास्त्र की नींव आचार शास्त्र के ऊपर रखी है। वह कहता है—'धर्म का सम्बन्ध

सुख के साथ है और अधर्म का दु:ख के साथ। किन्तु हम देखते हैं कि इस जगत् में दुर्जन पुरुष फलते-फूलते तथा सज्जन दु:ख पाते हैं। यदि कोई न्यायकारी ईश्वर जगत् का अधिष्ठाता है तो वह अवश्य ही भविष्य में दुष्टों को दु:ख का भोग और सज्जनों को सुख का भोग अवश्य कराऐगा।' प्रसिद्ध दार्शनिक ह्यूम कहते हैं–'दर्शन-शास्त्र को पुनर्जन्म का सिद्धान्त मानना पड़ेगा क्योंकि जो अनन्त (अविनाशी) है, वह अनादि (अनुत्पन्न) है।' एम्पीडोक्लीज ने पुनर्जन्म का आधार सांख्यदर्शन और गीता को ही बनाया है। आधुनिक काल के महान् दार्शनिक आइकन का कहना है कि जीवन की सबसे पुष्ट व्याख्या वह है जो मनुष्य को प्राकृतिक जगत् से उठाकर परमात्मा की ओर ले जाए और यह भी बताए कि उन्नति का क्षेत्र केवल इसी जन्म तक सीमित नहीं है अपितु भविष्य के जन्मों तक फैला है।

प्रकृति के चितेरे कवि बर्डसवर्थ ने अपनी एक कविता में लिखा है–'जिस प्रकार तारे छिपकर फिर निकल आते हैं। इसी प्रकार आत्मा एक शरीर को छोड़कर बहुत दूर कहीं दूसरा जन्म धारण कर लेता है।' टेनिसन का कहना है–'हमें ठीक तरह से स्मरण भले ही न हो कि पूर्वजन्मों में कब, कहां मिले किन्तु यह निश्चित है कि हम एक-दूसरे से अनेक बार मिले हैं।' अमेरिका के महान् दार्शनिक साहित्यकार इमर्सन कहते हैं–'बहुत सी सीढ़ियां हमसे नीचे हैं, जिन्हें हम चढ़ चुके हैं और बहुत सी हम से ऊपर हैं जिन पर हमें अभी चढ़ना है।...परिपक्व बुद्धिवाले मनुष्य को पुनर्जन्म का सिद्धान्त बरबस स्वीकार करना पड़ता है।' कवि ब्राउनिंग की एक कविता का भाव इस प्रकार है कि मेरा अब भी तुम पर अधिकार है। यद्यपि मैं इस जन्म में तुम्हारे प्रेम को प्राप्त नहीं कर सका। मुझे कई जन्म लेने पड़ेंगे अत: संभव है कि तुम्हें प्राप्त करने में विलम्ब हो जाए परन्तु मैं तुम्हें प्राप्त करके ही रहूँगा। मुझे बहुत कुछ सीखना व बहुत कुछ विसारना होगा, इससे पूर्व कि मैं तुम्हें पा सकूँ। अपनी एक अन्य कविता में वह लिखता है कि जीवन का कोई अन्त नहीं। पुराना होकर भी पुनर्जन्म के कारण जीव नवीनता को प्राप्त करता है।

इंग्लैण्ड के महान् दार्शनिक एडवर्ड कारपेण्टर ने अपने ग्रन्थ में लिखा है–'जो मनुष्य इस पृथिवी पर जन्म धारण करता है वह इस जगत् के लिए कोई सर्वथा नवीन आत्मा नहीं होता।' बैलजियम के प्रसिद्ध वैज्ञानिक मैटरालंक का कहना है कि 'आवागमन का सिद्धान्त सब धार्मिक मान्यताओं में सर्वाधिक माननीय मान्यता है।' सुकरात का मानना है–'समस्त ज्ञान केवल पूर्वज्ञान की स्मृति ही तो है।' कैथिगर के अनुसार–'हमारे जन्म अनादि काल से होते आ रहे हैं।' हक्सले का मानना है कि पुनर्जन्म का सिद्धान्त सत्य पर आधारित है तथा इसके पक्ष में अनेक युक्तियां हैं।' हैनरी फोर्ड ने लिखा है–'जीवन नित्य और निरन्तर है। मानव आत्मा नित्य है। एक स्वाभाविक ज्ञान होता है जो हमें पूर्वजन्मों

से प्राप्त होता है या पूर्वजन्मों से साथ आता है। यदि हम पूर्वजन्मों में प्राप्त किए गए अनुभव का अगले जन्मों से लाभ न उठा सकते हों तो फिर तो कार्य ही निरर्थक हो जाता है। विश्वास केवल पूर्वज्ञान की स्मृति है। हमारे पूर्वज इस सत्य को जानते थे। उन्हें वह ज्ञान प्राप्त था कि जिसे हम खो चुके हैं परन्तु मानव जाति पुन: पीछे की ओर जा रही है। विज्ञान अब पुन: लुप्त हो चुकी सच्चाईयों का पता लगा रहा है और आवागमन का सिद्धान्त समस्त ज्ञान का निचोड़ है। जब मुझे इस आवागमन के सिद्धान्त का ज्ञान हुआ, मैंने अनुभव किया कि जैसे मैंने एक सार्वभौमिक व्यवस्था को पा लिया है। मैंने अनुभव किया कि ऐसा अवसर है कि मैं अपने विचारों को साकार कर सकता हूँ प्रत्युत मेरे लिए सीमित समय नहीं। मैं अब घड़ी की सूईयों का दास नहीं। मेरे लिए व मेरी भान्ति ही अन्य सब जनों के लिए योजना बनाने व सृजन के लिए पर्याप्त समय है।' मैक्समूलर ने उपनिषद् की इस बात को स्वीकार किया है कि–'मरणोपरान्त आत्मा अपने सूक्ष्म-शरीर के साथ एक नाड़ी के रास्ते हृदय से निकलकर कर्मानुसार अगला जन्म धारण करता है।'

बीसवीं सदी में 'ईश्वर मर गया' का नारा देने वाले नास्तिक जर्मन दार्शनिक नीत्शे का कहना है–'कर्म-शक्ति के जो रूपान्तर हमेशा हुआ करते हैं, वे मर्यादित हैं और काल अनन्त है। इसलिए कहना पड़ता है कि एक बार जो नामरूप हो चुके हैं, वही फिर भी यथापूर्व कभी न कभी अवश्य उत्पन्न होते हैं। इसी से कर्मचक्र केवल आधिभौतिक दृष्टि से सिद्ध हो जाता है। यह कल्पना या उत्पत्ति मुझे अपनी स्फूर्ति से मालूम हुई। प्रसिद्ध दार्शनिक फीडो के अनुसार 'मनुष्य का एक पार्थिव शरीर होता है जो मृत्यु का ग्रास हो जाता है, एक उसमें अजर-अमर सत्ता होती है जो अनिश्वर है, अमर है।' वस्तुत: यह सिद्धान्त मुसलमानों, ईसाईयों और यहूदियों को छोड़कर और सब में प्रचलित था। पुराने मिस्री भी इसको मानते थे। अमेरिका के प्राचीन निवासी, जिनको रेड इण्डियन कहते हैं, और आस्ट्रेलिया वालों में भी यह सिद्धान्त मान्य था। अमेरिका का एक लेखक लिखता है–'इस सिद्धान्त के विरुद्ध केवल यहूदी धर्म और वे धर्म हैं जो यहूदी धर्म से निकले हैं, क्योंकि उनका सिद्धान्त है कि मनुष्य की उत्पत्ति अभाव से हुई है। विचित्र बात यह है कि साथ ही साथ वे यह भी मानते हैं कि जीवात्मा अमर है और अविनाशी है। यह सत्य है कि वे अग्नि और तलवार के बल से यूरोप तथा एशिया के एक भाग से मनुष्य जाति के इस आदिम और शान्तिप्रद सिद्धान्त को बहिष्कृत करने में सफल हुए हैं, किन्तु यह संदिग्ध बात है कि वे कितने दिन तक सफल रहेंगे। इसमें इनको कितनी कठिनाई हुई, इसकी प्राचीन ईसाई धर्म के इतिहास से भली-भान्ति साक्षी मिल जाती है, क्योंकि बहुत से विरोधी इस (पुनर्जन्म के) सिद्धान्त को मानते थे। उदाहरण के लिए साइमोनेस्ट, बसीलीडियन, वैलेण्टीनियन, मार्शनिस्ट, नॉस्टिक (ज्ञेयवादी) तथा मैनीचियन, (ये उन ईसाई सम्प्रदायों के नाम है जो पुनर्जन्म को मानते थे)। टर्टूलियन और

जस्टीनस का कहना है कि यहूदी लोग भी किसी अंश तक इस सिद्धान्त को मानते थे। 'टाल्मड' पुस्तक (यह यहूदियों का प्राचीन धर्मग्रन्थ है) में लिखा है कि आबील का आत्मा सेठ के शरीर में गया और फिर मूसा के शरीर में। मैथ्यू इंजील के सोलहवें अध्याय की 13 से 15 तक की आयतों का बुद्धिपूर्वक अर्थ तभी लगाया जा सकता है। जब पुनर्जन्म के सिद्धान्त को मान लिया जाए।' ईसाई लोग आत्मा की उत्पत्ति तो मानते हैं किन्तु नाश नहीं। ट्रिनटी कॉलेज कैम्ब्रिज में दर्शन शास्त्र के प्राध्यापक मैकटेगर्ट ने अपनी पुस्तक 'आत्मा की अमरता और पूर्वसत्ता' में लिखा है—'यदि आत्मा बनाया गया तो प्रश्न होता है कि किसलिए बनाया गया। यदि प्रत्येक आत्मा नवीन उत्पन्न किया जाता है तो उसके उत्पन्न करने की क्या आवश्यकता पड़ गई। संसार तो उसकी उत्पत्ति से पूर्व भी चल रहा था।' वह आगे लिखता है—'यदि आत्मा को अनन्त मानते हो तो अनादि भी मानो। और आत्मा को अनादि और अनन्त मान लेने पर यह भी मानना पड़ेगा कि प्रारंभ से ही अनेकों आत्माएं हैं—कोई किसी से पैदा नहीं होती। तब जिस कारण वर्तमान जन्म हुआ उसी कारण से जन्मान्तर भी होंगे।' इसलिए ईसाई मत के बड़े-बड़े बुद्धिजीवी विद्वानों ने पुनर्जन्म को स्वीकार किया है तथा पार्सेलसस बोहिमी और स्वीडनबर्ग ने भी इसकी पुष्टि की है। फ्रांस के लैसिंग ने तर्क दिया कि 'मनुष्य का स्वभावत: पापी होना (जैसा कि बाईबल मानती है) तभी स्वीकार किया जा सकता है जबकि पुनर्जन्म को माना जाए अन्यथा पाप कहां से आया? यदि कहो कि ईश्वर ने मनुष्य के साथ लगा दिया तो ईश्वर भी पापी ठहरता है।' बाईबल में लिखा है कि मृत्यु पापों के कारण होती है। अब सोचने की बात यह है कि कुछ बच्चे मां के गर्भ में ही मर जाते हैं और कुछ बहुत ही छोटी आयु में मर जाते हैं। उन्होंने इस जन्म में कौन से पाप किए? निश्चय ही इसका कारण पूर्व-जन्म के कर्मों का फल ही मानना पड़ेगा। प्रसिद्ध दार्शनिक आइकन का कहना है कि जीवन की सबसे पुष्ट व्याख्या वह है जो मनुष्य को प्राकृतिक जगत् से उठाकर परमात्मा की ओर ले जाए और यह भी बताए कि उन्नति का क्षेत्र केवल इसी जन्म तक सीमित नहीं है, अपितु भविष्य के जन्मों तक फैला है। वह काण्ट के स्वर में स्वर मिलाते हुए कहता है कि यदि वर्तमान जीवन में ऐसा नहीं होता तो अगले जन्म में होगा।

यह भी विचारणीय है कि छोटे-छोटे बच्चे सोए-सोए ही कभी हंसते हैं, कभी रोते हैं और कभी-कभी चौंक से पड़ते हैं। इसका भाव है कि बच्चा कुछ न कुछ देखता या अनुभव करता है...। यह भी चिन्तनीय है कि छोटे से छोटे बच्चे में भी कुछ तो ज्ञान है ही। विकासवादी वैज्ञानिकों ने भी यह सिद्ध करने का प्रयास किया है कि नवजात बच्चे के स्वभाव से मालूम होता है कि वह पिछला कुछ अनुभव लाया है। इसके लिए डॉ. रॉबिन ने एक महीने से कम आयु के बच्चों को उंगली या एक इंच मोटी लकड़ी के सहारे लटकाया तथा वे कुछ

सैकिण्ड तक लटके रहे। विकासवादी इससे क्या बताना चाहते हैं, हमारा यह विषय नहीं बल्कि हमारा यह कहना है कि ये पुराने संस्कार शरीर के परमाणु नहीं ला सकते। संस्कारों को लाने के लिए तो जीवात्मा ही होना चाहिए क्योंकि लटकने का स्वभाव, स्मृति या ज्ञान, चाहे प्रकट हो चाहे गुप्त, भौतिक नहीं किन्तु आध्यात्मिक है। इन संस्कारों से जीव के जन्म से पहले का अस्तित्व स्पष्ट हो जाता है' इसलिए आब्री इस सम्बन्ध में लिखता है–'यह पुराना विश्वास जगत्-व्यापी है और प्राचीन से प्राचीन समय तक पाया जाता है। यहाँ तक कि इंग्लैण्ड के एक पादरी को कहना पड़ा कि इस विश्वास के माता-पिता और पूर्वजों का पता नहीं चलता अर्थात् यह सिद्धान्त आदिकाल से ही प्रचलित है।'

कुरान में भी लिखा है–'एक मनुष्य! तुझ पर जो विपदा आती है वह तेरे अपने ही हाथों की कमाई है।' तथा यदि तू एक कण जितना भी पुण्य कर्म करेगा तो तेरे सम्मुख आ जाएगा और यदि तू कण जितना पाप करेगा तो वह भी तेरे सामने आ जाएगा।' इस सम्बन्ध में पं० चमूपति जी लिखते हैं–'(जो) मुसलमान बन्धु आवागमन के सिद्धान्त को नहीं मानते इसलिए वे इस जीवन के ऐसे सुख-दु:ख जिनके लिए वर्तमान जन्म के कर्म उत्तरदायी नहीं, का कोई उचित कारण नहीं बता सकते। उदाहरण के लिए भले लोग कष्ट पाते हैं। हजरत मुहम्मद मुसलमानों की दृष्टि में निष्पाप व्यक्ति हैं परन्तु...उनका निधन हो गया जिससे हजरत को दु:ख था। हजरत ने अश्रु भी गिराए। हजरत स्वयं मृत्यु से पूर्व रूग्ण रहे। इसका कारण?...यदि वर्तमान जीवन के सुख और दु:ख अकारण मिले हैं तो भविष्य में अर्थात् प्रलय के समय न्याय के दिन नरक व स्वर्ग पर आचरण के प्रतिबन्ध की मान्यता दार्शनिक दृष्टि से कहां तक उचित है? या फिर यह मानना पड़ेगा कि संसार में तो खुदा बिना न्याय के कार्य चलाता है परन्तु अकबा (अगले लोक) में अपना व्यवहार बदल लेगा। सजा व जज़ा (कर्मफल रूप सुख-दु:ख) की मान्यता मानने के पीछे जहां परमात्मा को न्यायकारी मानना आवश्यक है वहाँ उसके न्याय के गुण की अनादि व नित्य की विशेषता स्वीकार करने के लिए यह भी आवश्यक है कि कर्त्ता जीवों को भी अनादि व नित्य माना जावे। क्योंकि एक जीवन के कर्मों का फल एक ही जीवन में नहीं मिल जाता इसलिए अनेक जीवन माने जावेंगे। मुसमलान भाई इस जीवन के पश्चात् एक और जीवन को तो मानते हैं, जिसे वे 'अकबा' (हेयर आफटर) का नाम देते हैं। वे इस जीवन के कर्मों के फल दु:ख-सुख का बड़ा भाग इसी परलोक के लिए सुरक्षित रखते हैं परन्तु इस जीवन से पूर्व किसी अन्य जीवन को वे नहीं मानते। औचित्य यह है कि वे पूर्वजन्म को भी मानें और उसका नाम प्रथम या पुराना रख दें।'

वास्तविकता यह है कि प्रत्यक्ष रूप में भले ही वे पुनर्जन्म के सिद्धान्त को न माने मगर परोक्षरूप से स्वाभाविक रूप से पुनर्जन्म का सिद्धान्त ही प्रकट होता है तथा मुसलमान भाईयों में भी ऐसे निष्पक्ष एवं बुद्धिजीवी विद्वान हुए हैं जो

पुनर्जन्म को मानते हैं। पुनर्जन्म का समर्थन मौलाना रूमी ने भी अपनी प्रसिद्ध मसनवी में किया है और लिखा है कि मैंने अनेक योनियां देखीं और सबजे की भांति अनेक बार उत्पन्न हुआ। कुरान मजीद की सूरत अलबकरा की 24वीं आयत में लिखा है–'तुम अल्लाह के साथ कुफ्र की नीति कैसे अपनाते हो जबकि तुम निर्जीव थे, उसने तुम्हें जीवित किया। फिर वह ही तुम्हें मारता है। फिर वही तुम्हें जीवित करता है। फिर उसी की ओर तुम लौट जाओगे (अनुवादक मौ० मोहम्मद फ़ारूख खां)' इससे आगे कुरान मजीद में यह भी आया है कि 'तुम इन्सान थे, तुम्हें बन्दर बना दिया गया, फिर बन्दर से इन्सान बना दिया गया। फिर इन्सान से बन्दर बना दिए जाओगे।' इन पंक्तियों से पुनर्जन्म ही तो प्रकट होता है...मौलाना यह भी लिखते हैं–'मैं सात सौ सत्तर बार जन्म ले चुका हूँ। मैं वनस्पतियों के समान अनेक बार पैदा हुआ हूँ। मुसलमानों के एक प्रमाणिक ग्रन्थ 'सही बुखारी।' मैं आया है कि–'हज़रत मुहम्मद मस्जिद में एक खम्बे से जो खजूर की लकड़ी से बना हुआ था, का तकिया लगाकर प्रवचन किया करते थे। जब हजरत मिम्बर पर आए तो वह खम्बा रोने-चिल्लाने लगा जैसे कि अभी फट जावेगा। हजरत मेम्बर से उतरे और उस खम्बे को अपने पवित्र शरीर से लगा लिया। तब वह खम्बा ऐसे रोने लगा जैसे कि कोई बालक रोता है और कोई उसे प्यार करके चुप करावे तथा वह रोता रहे। अन्ततः वह खम्बा चुप हो गया। आपने कहा यह खम्बा अल्लाह की चर्चा सुना करता था इसलिए शोक से रोने लगा। 'मुसलमानों की ही एक अन्य पुस्तक 'जिकर उलशाहादतीन' में आता है कि हजरत मुहम्मद की यह उत्कट इच्छा थी कि वे बलिदान हो, पुनः जन्म लें, पुनः बलिदान हों, फिर जन्म लें और पुनः बलिदान हों...'ये सभी प्रसंग पुनर्जन्म के ही सिद्धान्त की पुष्टि करते हैं।

इस सम्बन्ध में हाफिज़ अताउल्ला साहिब ने अपनी पुस्तक 'आवागमन' में मुसलमानों से एक प्रश्न किया–'यदि आवागमन (पूर्व-जन्म) का सिद्धान्त ठीक नहीं तो मैं जन्म से अन्धा पैदा क्यों हुआ? अतः ईश्वर पक्षपाती न होने के कारण पुनर्जन्म का सिद्धान्त ठीक है। (प्रभाव 29) और अन्धा और आंख वाला बराबर नहीं (35/19 फ़ितर)। 'यदि पुनर्जन्म को नहीं मानेंगे तो ऊपर हमने जो भी प्रश्न व समाधान दिए हैं उनके बारे में मुसलमान भाईयों के पास क्या उत्तर है? खुदा अपनी ओर से ही किसी को जन्नत में और किसी को जहन्नम में नहीं भेज देता है...आखिर इसका कुछ तो कारण होगा? यदि हमारे मुसलमान भाई यह मानते हैं कि रोज़े महशर से खुदाताला मौजूदा जन्म के कर्मों के फल के मुताबिक जहन्नुम या बहिश्त अता फरमाएगा तो यह प्रश्न लाज़मी उठेगा कि इस मौजूदा जन्म के सुख-दुःख कौन से कर्मों का फल हैं? और रोज़े महशर जब खुदा मुर्दो को कबरों से उठाऐगा तो क्या खाली आत्माएं उठेंगी? या खाली शरीर उठेंगे? या आत्मा और शरीर का योग उठेगा, यदि शरीर साथ होंगे तो पुनर्जन्म सिद्ध है।

बौद्ध और जैन मतों ने भी किसी न किसी प्रकार से पुनर्जन्म को माना है। बौद्ध लोग यद्यपि आत्मा को नित्य नहीं मानते तथापि वैदिक धर्म में वर्णित पुनर्जन्म की कल्पना को उन्होंने अपने धर्म में पूरी तरह अपनाया है। बौद्धों द्वारा तो अपने नए गुरु का चुनाव भी पुनर्जन्म के आधार पर ही किया जाता है...। बौद्ध तथा जैन मत के मानने वालों का सिद्धान्त है कि आवागमन में कर्मों का फल भोगना पड़ता है मगर जब मनुष्य सुख-दुःख को समान समझकर अपनी इच्छाओं को मार लेता है तो फिर वह जन्म नहीं लेता। इसी को निर्वाण पद कहते है। सिक्ख मत के ग्रन्थ में लिखा है—**आपे बीज आपे ही खाह, नानक हुकती आवे जाहा (20), चंगयाईयां बरयाईयां बाचे धर्म हदूरि। करमी आपो आपनी के नेड़े के दुरि॥** (जपजी) अर्थात् व्यक्ति आप ही कर्मों का बीज बोता और आप ही उसके फल खाता है...परमात्मा के न्याय नियम से वह अनेक जन्म लेता है। अच्छे और बुरे कर्म प्रभु के दरबार में पढ़े जाते हैं और जैसी अपनी करनी इस लोक या परलोक में होती है वैसा ही फल मिलता है। कोई भी कर्मो के फल को मिटा नहीं सकता है, इस सम्बन्ध में कहा गया है—**लेख न मिटई पूरबि कमाईया, क्या जाना क्या होसी॥** (धनासरि म०1) कर्म फल कोई मिटा नहीं सकता, वह अवश्य ही भोगना पड़ता है, जीव को कुछ भी मालूम नहीं कि उसके साथ क्या होगा क्योंकि कर्म-फल परमात्मा के अधीन है।

महाशय चिरंजीलाल जी प्रेम का कहना है कि पुनर्जन्म के सिद्धान्त को संसार की विभन्न जातियां पहले भी मानती रही हैं और आज भी मानती हैं। उनकी श्री जिज्ञासु जी द्वारा सम्पादित पुस्तक से हम कुछ प्रसंग देना चाहते हैं—

(1) प्राचीन मिस्त्र के लोग मानते थे कि आत्मा 300 वर्षों तक पशु आदि योनियों में घूमता हुआ अमर हो जाता है। बटेरी ने अपनी पुस्तक में लिखा है—'परमात्मा आत्मा की दुःखभरी आवाज का उत्तर देता है, यदि पापरहित होंगे तो उन्हें स्वर्ग में खुला स्थान मिलेगा और यदि पापी होंगे तो पृथिवी पर जन्म लेना होगा और यदि अत्यन्त पापी होंगे तो पशु की योनि मिलेगी।'

(2) मिस्त्र की गुफाओं में एक शिलालेख मिलता है जिस पर लिखा है—'पुनर्जन्म के चक्कर में आकर आत्माएं कीट, पशु, पक्षी तथा मनुष्य आदि योनियों में से गुजरती हैं। पापी आत्माओं को पाप का दुःख भोगना पड़ता है। ईश्वर तथा मनुष्य में इतना अन्तर है कि एक जन्म-मरण के चक्कर में फंसता है और दूसरा इससे मुक्त है।'

(3) प्रसिद्ध विजेता सीज़र ने लिखा है कि फ्रांस के प्राचीन गाल लोगों में एक लोकोक्ति प्रचलित थी कि एक जाति पुनर्जन्म के सिद्धान्त पर विश्वास रखती हुई भी भीरू हो तो यह समझना चाहिए कि इस जैसी मूर्ख और कोई जाति नहीं।

(4) प्रसिद्ध दार्शनिक प्लेटो कहा करता था—'आत्मा सदा अपना चोला बुनता रहता है। इसका भाव गीता (2-22) से मिलता है।

(5) रि-इनकारनेशन पुस्तक के लेखक विलियम वाकर ने लिखा है कि समस्त यूरोप की जातियां इस सिद्धांत को मानती थी। डू-एड लोगों में, सैलट जाति में तथा उनसे उतर कर फ्रांसीसी जाति में यह भाव कार्य करता था कि वे बालक के जन्म लेने पर रोया करते थे तथा मरने पर हंसा करते थे, आनन्द मानते थे क्योंकि वे समझते थे कि यह जीवन एक प्रकार का बन्धन है तथा मरकर ही जीव बन्धन मुक्त होगा।

(6) प्राचीन कैलोडीन लोग मृत व्यक्ति की कब्र में शव के साथ भोजन, वस्त्र आदि रखा करते थे क्योंकि वे समझते थे कि आत्मा नष्ट नहीं होता। इसलिए इसे इन वस्तुओं की आवश्यकता पड़ेगी।

(7) मैक्सिको के प्राचीन लोगों का विश्वास था कि सरदारों व श्रीमन्त घरों के लोगों के आत्मा मृत्यु के पश्चात् सुन्दर-सुन्दर पशुओं व पक्षियों का शरीर धारण करते हैं। निम्न व्यक्तियों के आत्मा सुअर, कुत्ते आदि निचली योनियों में जाते हैं।

(8) संस्थाल के लोग मानते थे कि सज्जन लोगों की आत्माएं फल वाले वृक्षों में प्रवेश करती हैं।

(9) काबुल के अफगान लोग विश्वास करते हैं कि बड़े-बड़े वीरों व सरदारों के आत्मा विशेष-विशेष पक्षियों में प्रवेश करते हैं तभी वे इन पक्षियों की विशेष रूप से रक्षा करते हैं। उनको किसी प्रकार का कष्ट नहीं देते तथा उनके साथ मनुष्यों जैसा व्यवहार करते हैं।

(10) अफ्रीका के जुलू लोगों का विश्वास है कि मृत आत्माएं सर्प, छिपकली आदि में प्रवेश करती हैं।

(11) अफ्रीका के कई अर्ध-सभ्य लोग यह मानते हैं कि मरने के पश्चात् आत्माएं शरीर खोजती फिरती हैं। जो शरीर मिले उसी में चली जाती हैं। इस कारण ये लोग घरों के निकट ही मृतकों को दबा देते हैं तथा कब्रों में मोरी भी रखते हैं। घरों के द्वार खोल देते हैं ताकि वे पुनः हमारे घर में आएं।

(12) ब्रह्मदेश, चीनी तथा जापानी सब इसी सिद्धान्त में विश्वास रखते हैं। इस प्रकार संसार का 2/3 भाग इस सिद्धान्त को मानता है।

111वीं जयन्ती : 23 जुलाई 2017 पर विशेष

आर्यावर्त का वह आर्यवीर–चन्द्रशेखर आजाद जिसके सिंह पराक्रम से ही काँपती थी अंग्रेज सरकार

–प्रियवीर हेमाइन

वसुमति वसुन्धरा धरती माता आदिकाल से ही अनेक नररत्नों को अपने गर्भ में रखती चली आयी है, इसीलिए इसी बारे में संस्कृत साहित्य में लिखा है–

दाने तपसि शौर्ये च विज्ञाने विनये नये।
विस्मयो न हि कर्त्तव्यो बहुरत्ना वसुन्धरा।।

दान में, तपस्या में, शौर्य में, विज्ञान में, विनम्रता में और नीति में आश्चर्य नहीं करना चाहिए, क्योंकि यह वसुन्धरा एक नहीं, अनेक-अनेक रत्नों वाली है।

सन् 1921 के ये वे ही दिन थे जब पूरे ही देश में अंग्रेजी साम्राज्य के विरुद्ध एक लहर सी दौड़ रही थी। देश की तरुणाई भी लुटेरे जालिम अंग्रेजों को सात समुद्र पार खदेड़कर स्वाधीन होने के लिए मचल रही थी।

बनारस के गवर्नमेन्ट संस्कृत कॉलेज पर भी कुछ देशभक्त युवक जब धरना दे रहे थे, उनको गिरफ्तार कर लिया गया। उन्हीं में से एक छोटे से बालक को नारे लगाते देख, पुलिस वालों का खून-खौल उठा। एक पुलिस वाले ने तो तमाचा मारते हुए उसे हथकड़ी भी पहना दी। पुलिस उसे घसीटती हुई कोर्ट ले गई। आखिर उसे कोर्ट में अंग्रेज जज के सामने पेश किया गया और मात्र 'भारत माता की जय' बोलने के अपराध में जज ने उसे कोड़ों की भयंकर सजा दी।

कोड़े खाकर उसी समय अहिंसा का वह वीर पुजारी आग का गोला बनकर धधक उठा। उसने वहीं भरी अदालत में यह प्रतिज्ञा भी की कि जब तक ईंट का जवाब पत्थर से नहीं दूँगा तब तक कभी चैन से नहीं बैठूँगा।

तुम्हारा नाम क्या है? तुम्हारे पिता का नाम क्या है? तुम्हारा निवास स्थान कहाँ है? ये तीन प्रश्न भी उसी चौदह- वर्षीय बालक से बड़े ही रोबीले स्वर में जब मजिस्ट्रेट ने पूछे तो उसने उत्तर में जो कहा वह यही कहा–"अदालत सुने और कान खोलकर सुने–मेरा नाम है–"आजाद!" "आजाद!!" "आजाद!!!" मेरे पिता श्री का नाम है–"स्वाधीन!" "स्वाधीन!!" "स्वाधीन!!" और मेरा निवास स्थान है–"जेलखाना! या कहना चाहिए कारागार! कारागार!! कारागार!!!"

उस अल्पायु बालक के इन उत्तरों को ज्यों ही सुना अदालत ने दाँतो तले अँगुली ही दबा ली, फिर वह धधक भी उठी और जल-जलकर भस्म ही होने को थी कि उसने आज्ञा दी–इस दीवाने को पन्द्रह बेतें और लगाई जायें। पर इससे भी वह यज्ञोपवीतधारी देशभक्त दीवाना भला कहाँ डरने वाला था? उसी समय देखते ही देखते कोमल शरीर पर तड़ातड़ बेंत पड़ने लगे, पर उस बालक के मुख से आह तक भी न निकली। वह वीरधीर बालक तो प्रत्येक ही बेंत के आघात पर बस यही उद्घोष करता रहा–"वन्दे मातरम्!", "भारतमाता की जय"। "भारतमाता की जय!!" उस वीर-धीर बालक का नाम था 'चन्द्रशेखर'। इसी लोमहर्षक अति भयंकर का नाम था 'चन्द्रशेखर'। इसी लोमहर्षक अति भयंकर घटना के बाद तो बालक का वही नाम जो उसने अदालत को बताया था, उपनाम उसका बना और कालांतर में यही 'आजाद' उपनाम, सुनाम बनकर सदा-सदा के लिए अमर हो गया।

उन 15 बेंतों के प्रत्येक ही आघात ने चन्द्रशेखर के बालहृदय को अंग्रेजों

के प्रति घृणा से ही भर दिया था। बालक चन्द्रशेखर विदेशी अत्याचारी अंग्रेजों के साम्राज्य को देश से उखाड़ फेंकने के लिए संकल्पना ही कर बैठा था। दिन रात वह यही सोचा करता था कि कैसे इन अंग्रेजों को यहां से खदेड़ा जाये।

फरार होकर आजाद उस बम पार्टी में सम्मिलित हो गये जो देश को स्वतन्त्र कराने के लिए भारत में उस समय अच्छी तरह से काम कर रही थी, जो देश से अंग्रेजी शासन को सशस्त्र क्रांति के बल पर उखाड़ फेंकना चाहती थी। रामप्रसाद बिस्मिल, राजेन्द्र लाहिड़ी, अशफाक उल्ला खाँ, सचीन्द्रनाथ सान्याल जैसे नौजवान इसी दल के ही सदस्य थे जो सिर से कफन बाँधकर अंग्रेजी सरकार को निकालने के लिए प्रयत्न कर रहे थे। यह दल वही था जो बमों, पिस्तौलों और बन्दूकों से पराधीनता के जुए को उतार फेंकना चाहता था। सशस्त्र क्रान्ति के आयोजन के लिए दल को भारी मात्रा में धन की आवश्यकता थी ही। उस समय के पूँजीपति जितने भी थे, वे सब ही हृदय से अंग्रेजों के ही भक्त थे, इसीलिए क्रान्तिकारियों को उनसे धन की सहायता मिल ही नहीं पा रही थी। अन्ततः लाचार होकर क्रान्तिकारियों को डाका डालकर धन प्राप्त करने का मार्ग ही अपनाना पड़ा। क्रान्तिकारियों ने शाहजहाँपुर के पास काकोरी रेलवे स्टेशन के निकट ट्रेन रोक कर सरकारी खजाने को ज्यों ही लूटा, अंग्रेजी सरकार दहल गयी–भय से काँप उठी।

अंग्रेजी सरकार ने इस ऐतिहासिक ट्रेन डकैती काण्ड के प्रायः सभी अभियुक्तों को गिरफ्तार भी कर लिया था, किन्तु चन्द्रशेखर आजाद हाथ ही न आ सके थे, क्योंकि उनकी तो प्रतिज्ञा ही यह थी–"फिरंगी मुझे जिन्दा न पकड़ सकेंगे।"

सन् 1929 में वाइसराय की गाड़ी पर बम फेंकने की योजना में भी आजाद की भूमिका प्रधान रूप में थी। इतना ही नहीं, असेम्बली भवन में बम फेंकने की योजना भी आजाद द्वारा ही रची गयी थी। भगतसिंह और सुखदेव को जेल से छुड़ाने की योजना भी आजाद ने रची परन्तु देश का दुर्भाग्य या अंग्रेजों का सौभाग्य कहिए असमय में ही वह योजना असफल हो गई। इसके बाद तो फिर जो होना था वही हुआ ही। जब दीपक ही घर को फूँकने लगे कैसे किस्मत फूट न जाये। दल के ही कुछ कायरों के कारण रामप्रसाद बिस्मिल और अशफाकउल्ला जैसों को फाँसी पर चढ़ना पड़ा। देश के वे दीवाने हँसते-हँसते ही फाँसी के झूलों पर झूल गये। बिस्मिल और अशफाक के बाद सुखदेव, भगतसिंह और राजगुरु भी 23 मार्च 1931 को फाँसी पर चढ़ गये। सतलुज की लहरों में आज भी उनकी चिता की राख गरम है। और भविष्य में भी वह राख कभी ठंडी पड़ जायेगी, यह भला कैसे संभव है। स्वतन्त्र भारत के आकाश में इन शहीदों के रक्त की ही लाली है। 7 अक्टूबर 1930 को जिस दिन भगतसिंह, सुखदेव और राजगुरु को फाँसी की सजा सुनाई गई, उस दिन आजाद बहुत ही क्षुब्ध हो उठे थे।

आजाद सन् 1930 के अन्त में कानुपर को छोड़कर इलाहाबाद चले गये। इलाहाबाद में ही एक दिन सुबह जब पण्डित जवाहरलाल नेहरू आनन्द भवन के

अपने कमरे में लेटे हुए थे, सहसा ही उनके कक्ष का द्वार खुला। जवाहरलाल ने देखा कि एक हृष्ट-पुष्ट तेजस्वी नौजवान सामने खड़ा है।

उस युवक ने गम्भीरता से कहा–"मेरा नाम चन्द्रशेखर आजाद है, मैंने आज तक जो कुछ भी किया है, वह देश की आजादी के लिए ही किया है। मैंने उनका ही खून बहाया है जो भारत की स्वतन्त्रता के शत्रु थे। इस समय मैं पुलिस से चारों ओर से घिरा हुआ हूँ, पुलिस मेरे पीछे बुरी तरह से हाथ धोकर पड़ी हुई है, आप बताएँ कि मैं क्या करूँ?"

जवाहरलाल युवक का मुँह देखते ही रहे, वे उसे कुछ उत्तर ही न दे सके। आजाद पाँच मिनट तक उत्तर की प्रतीक्षा भी करते रहे पर जब कोई उत्तर ही न मिला, दरवाजे से बाहर निकल आये।

और उसके दो घण्टे बाद ही जवाहरलाल ने सुना कि चन्द्रशेखर आजाद अब इस दुनिया में नहीं है। अल्फ्रेड पार्क में वे पुलिस की गोलियों का मुकाबला करते हुए वीरगति को प्राप्त हो गये।

हाय, हा हन्त! 27 फरवरी सन् 1931 का वह दुर्भाग्यपूर्ण दिन! जब दस बजे प्रयाग के अल्फ्रेड पार्क में माँ भारतीय का वह सपूत वीर आजाद पुलिस से चारों ही तरफ से घिर गया। आजाद राम नाम का तहमद बाँधे नंगे बदन थे ही और उनकी कटिल में पिस्तौल भी बंधा हुआ था ही। जब असंख्य अनगिनत पुलिस उनके सामने बन्दूक और पिस्तौल तानकर गोलियाँ चलाने लगी तो आजाद ने भी अपनी कमर से पिस्तौल निकाला और एक पेड़ की आड़ लेकर गोलियों के जवाब में गोलियाँ चलाने लगे। उनके माउज़र पिस्तौल में केवल बारह गोलियाँ ही उस समय थी, पर उनकी एक-एक गोली का निशाना इतना सही था कि यदि पुलिस पेड़ों की आड़ में न होती तो आजाद की बारह गोलियों से सैकड़ों की पंक्ति मौत के घाट वहाँ उतर जाती।

पर जब आजाद की पिस्तौल में केवल एक ही गोली रह गई तो उन्होंने कहा–आजाद आजाद है, वह अंग्रेजों की गोली से नहीं, अपनी ही गोली से मरेगा, और फिर अपने मस्तक में अपनी ही गोली मारकर भारत माता का वह सपूत चिर निद्रा में सो गया।

आजाद भारत में सब कुछ है पर आज भी भारतमाता की आँखें गीली ही हैं। वह अल्फ्रेड पार्क के फूलों में आज भी अपने आजाद को ढूँढ रही है। न जानें कब माँ भारतीय का वह वीर सपूत चिर निद्रा से जागेगा?

आजाद देश में आजाद जैसे शहीदों के ईंट और पत्थरों के ताजमहल चाहे न हों पर इतिहास का यह अमर शहीद, जिसके नाम से ही तत्कालीन सरकार काँपती थी, अपने वीरतापूर्ण कार्यों से युग-युग में अमर रहेगा ही।

"कीर्तिर्यस्य सः जीवति" जिसका यश अमर है वह सदा जीवित रहता है। वीर ही नहीं, विप्रवीर आजाद इसीलिए भी सदा जीवित रहेंगे क्योंकि उन्होंने अपने

पराक्रमी अनुपम जीवन से अथर्ववेद के इस मंत्र को भी व्यावहारिकता के धरातल पर पूर्ण रूप से सार्थक कर दिखाया–

अहमस्मि सहमान उत्तरो नाम भूम्याम्।
अभीषाडस्मि विश्वाषाडाशामाशां विषासहि:।। अथर्व॰12.1.154

राष्ट्र-भूमि पर मैं साहसी हूँ, भूमि पर मैं उत्कृष्ट भी हूँ। दुश्मन से मुकाबला पड़ने पर उसके छक्के छुड़ा देने वाला भी हूँ। मुझमें सब ही शत्रुओं को परास्त कर डालने की असीम शक्ति है–प्रत्येक दिशा में।

अन्त में आकर यहीं यह भी तो सोचने का विषय है कि जैसी वीरता इस वेदमंत्र में वर्णित है वैसे ही वीरता उस आजाद के व्यक्तित्व में थी। पर थी भी क्यों? उनमें ऐसी ही वीरता इसीलिए थी क्योंकि वे भारत की उसी बलिदानी मिट्टी में तो उत्पन्न हुए थे जिसने विदेशी विधर्मी मुगल साम्राज्य से लोहा लेनेवाले राणाप्रताप, शिवाजी, वन्दा वैरागी और गुरु गोविन्दसिंह जैसे वीरों को उत्पन्न किया था। भारत की मिट्टी का कण-कण ऐसे ही वीरों के चरणों की पावन रज से आज भी अपने आप को केवल पावन पुनीत ही नहीं अपितु धन्य भी मानता है। श्री चन्द्रशेखर आजाद भी ऐसे ही वीरों की श्रेणी में आने वाले अनुपम ओजस्वी वीर थे। भारत की वीर परम्परा में वे एक नया ही अध्याय लिखकर गये जो स्वाधीनता आन्दोलन के इतिहास में मजबूती से जुड़ा हुआ है। इतना ही नहीं, आजाद ने अपने चमकते हुए खून से जो वीरता का नया अध्याय स्वाधीनता संघर्ष में लिखा, देश उस पर सदा ही अभिमान करेगा। नमन, बहुसंख्य नमन उस वीरात्मा आजाद को! जो जीते-जी फिरंगियों के हाथ न आया! नमन उस वीर माता जगरानी देवी को भी जिसने चन्द्रशेखर आजाद जैसी वीर सन्तान उत्पन्न करके राष्ट्र को समर्पित की। वह परलोकवासी माता आज भी अपने चन्द्रशेखर की वीरता को याद करके अवश्य कहीं प्रसन्न हो रही होगी, क्योंकि–

सुतविक्रमे सति न नन्दति का खलु वीरसू:।। (कुमार॰12-59)

वीर सन्तान उत्पन्न करनेवाली माता अपने बेटे की बहादुरी देखकर प्रसन्न होती ही है।

मातृभूमि की रक्षा के लिए प्राण दिए ही नहीं, लिए भी जाते हैं

सन् 711 ई॰ की बात है। अरब के पहले मुस्लिम आक्रमणकारी मुहम्मद बिन कासिम के आतंकवादियों ने मुल्तानविजय के बाद एक विशेष सम्प्रदाय हिन्दू के ऊपर गांवों शहरों में भीषण रक्तपात मचाया था। हजारों स्त्रियों की छातियाँ नोच डाली गयीं, इस कारण अपनी लाज बचाने के लिए हजारों सनातनी किशोरियां अपनी शील की रक्षा के लिए कुंए तालाब में डूब मरीं। लगभग सभी युवाओं को या तो मार डाला गया या गुलाम बना लिया गया। भारतीय सैनिकों ने ऐसी बर्बरता पहली बार देखी थी।

एक बालक तक्षक के पिता कासिम की सेना के साथ हुए युद्ध में वीरगति को प्राप्त हो चुके थे। लुटेरी अरब सेना जब तक्षक के गांव में पहुंची तो हाहाकार मच गया।

स्त्रियों को घरों से खींच-खींच कर उनकी देह लूटी जाने लगी। भय से आक्रांत तक्षक के घर में भी सब चिल्ला उठे। तक्षक और उसकी दो बहनें भय से कांप उठी थीं। तक्षक की माँ पूरी परिस्थिति समझ चुकी थी, उसने कुछ देर तक अपने बच्चों को देखा और जैसे एक निर्णय पर पहुंच गयी। माँ ने अपने तीनों बच्चों को खींच कर छाती में चिपका लिया और रो पड़ी। फिर देखने-देखते उस क्षत्राणी ने म्यान से तलवार खींचा और अपनी दोनों बेटियों का सर काट डाला। उसके बाद अरबों द्वारा उनकी काटी जा रही गाय की तरफ और बेटे की ओर अंतिम दृष्टि डाली, और तलवार को अपनी छाती में उतार लिया। आठ वर्ष का बालक तक्षक एकाएक समय को पढ़ना सीख गया था, उसने भूमि पर पड़ी मृत माँ के आँचल से अंतिम बार अपनी आँखे पोंछी, और घर के पिछले द्वार से निकल कर खेतों से होकर जंगल में भाग गया।

25 वर्ष बीत गए। अब वह बालक बत्तीस वर्ष तक पुरुष हो कर कन्नौज के प्रतापी शासक नाग भट्ट द्वितीय का मुख्य अंगरक्षक था। वर्षो से किसी ने उसके चेहरे पर भावना का कोई चिह्न नहीं देखा था। वह न कभी खुश होता था न कभी दुखी। उसकी आँखे सदैव प्रतिशोध की वजह से अंगारे की तरह लाल रहती थीं। उसके पराक्रम के किस्से पूरी सेना में सुने सुनाये जाते थे। अपनी तलवार के एक वार से हाथी को मार डालने वाला तक्षक सैनिकों के लिए आदर्श था। कन्नौज नरेश नागभट्ट अपने अतुल्य पराक्रम से अरबों के सफल प्रतिरोध के लिए ख्यात थे। सिंध पर शासन कर रहे अरब कई बार कन्नौज पर आक्रमण कर चुके थे, पर हर बार योद्धा राजपूत उन्हें खदेड़ देते। युद्ध के सनातन नियमों का पालन करते नागभट्ट कभी उनका पीछा नहीं करते, जिसके कारण मुस्लिम शासक आदत से मजबूर बार-बार मजबूत हो कर पुनः आक्रमण करते थे। ऐसा पंद्रह वर्षों से हो रहा था।

इस बार फिर से सभा बैठी थी, अरब के खलीफा से सहयोग लेकर सिंध की विशाल सेना कन्नौज पर आक्रमण के लिए प्रस्थान कर चुकी है और संभवतः दो से तीन दिन के अंदर यह सेना कन्नौज की सीमा पर होगी। इसी सम्बन्ध में निर्णय लेने के लिए महाराज नागभट्ट ने यह सभा बैठाई थी। सारे सेनाध्यक्ष अपनी राय दे रहे थे...तभी अंगरक्षक तक्षक उठ खड़ा हुआ और बोला–"महाराज, हमें इस बार दुश्मन को उसी की शैली में उत्तर देना होगा।"

महाराज ने ध्यान से देखा अपने इस अंगरक्षक की ओर, बोले, "खुलकर अपनी बात कहो तक्षक, हम कुछ समझ नहीं पा रहे।"

"महाराज!, अरब सैनिक महाबर्बर हैं, उनके साथ सनातन नियमों के अनुरूप युद्ध कर के हम अपनी प्रजा के साथ घात ही करेंगे। उनको उन्हीं की शैली में हराना होगा।"

महाराज के माथे पर लकीरें उभर आयीं, बोले, "किन्तु हम धर्म और मर्यादा नहीं छोड़ सकते सैनिक।"

तक्षक ने कहा–"मर्यादा का निर्वाह उनके साथ किया जाता है जो मर्यादा का अर्थ समझते हों। ये बर्बर धर्मोन्मत्त राक्षस हैं महाराज! इनके लिए हत्या और बलात्कार ही धर्म है।"

"पर यह हमारा धर्म नहीं है वीर"

"राजा का केवल एक ही धर्म होता है महाराज, और वह है प्रजा की रक्षा। देवल और मुल्तान का युद्ध याद करें महाराज, जब कासिम की सेना ने दाहिर को पराजित करने के पश्चात प्रजा पर कितना अत्याचार किया था। ईश्वर न करे, यदि हम पराजित हुए तो बर्बर अत्याचारी अरब हमारी स्त्रियों, बच्चों और निरीह प्रजा के साथ कैसा व्यवहार करेंगे, यह आप भली भाँति जानते हैं।"

महाराजा ने एक बार पूरी सभा की ओर निहारा, सबका मौन तक्षक के तर्कों से सहमत दिख रहा था। महाराज अपने मुख्य सेनापतियों मंत्रियों और तक्षक के साथ गुप्त सभाकक्ष की ओर बढ़ गए।

अगले दिवस की संध्या तक कन्नौज की पश्चिम सीमा पर दोनों सेनाओं का पड़ाव हो चुका था, और आशा थी कि अगला प्रभात एक भीषण युद्ध का साक्षी होगा।

आधी रात्रि बीत चुकी थी। अरब सेना अपने शिविर में निश्चिन्त सो रही थी। अचानक तक्षक के संचालन में कन्नौज की एक चौथाई सेना अरब शिविर पर टूट पड़ी। अरबों को किसी हिन्दू शासक से रात्रि युद्ध की आशा न थी। वे उठते, सावधान होते और हथियार संभालते इसके पूर्व ही आधे अरब गाजर मूली की तरह काट डाले गए।

इस भयावह निशा में तक्षक का शौर्य अपनी पराकाष्ठा पर था। वह घोड़ा दौड़ाते जिधर निकल पड़ता उधर की भूमि शवों से पट जाती थी। आज माँ और बहनों की आत्मा को ठंडक देने का समय था...

उषा की प्रथम किरण से पूर्व अरबों की दो तिहाई सेना मारी जा चुकी थी। सुबह होते ही बची सेना पीछे भागी, किन्तु आश्चर्य! महाराज नागभट्ट अपनी शेष सेना के साथ उधर तैयार खड़े थे। दोपहर होते होते समूची अरब सेना काट डाली गयी। अपनी बर्बरता के बल पर विश्व विजय का स्वप्न देखने वाले आंतकियों को पहली बार किसी ने ऐसा उत्तर दिया था।

विजय के बाद महाराज ने अपने सभी सेनानायकों की ओर देखा, उनमें तक्षक का कहीं पता नहीं था। सैनिकों ने युद्ध भूमि में तक्षक की खोज प्रारंभ की तो देखा लगभग हजार अरब सैनिकों के शव के बीच तक्षक की मृत देह दमक रही थी। उसे शीघ्र उठाकर महाराज के पास लाया गया। कुछ क्षण तक इस अदुत योद्धा की ओर चुपचाप देखने के पश्चात महाराज नागभट्ट आगे बढ़े और तक्षक के चरणों में अपनी तलवार रख कर उसकी मृत देह को प्रणाम किया। युद्ध के पश्चात् युद्धभूमि में पसरी नीरवता में भारत का वह महान सम्राट गरज उठा–

"आप आर्यावर्त की वीरता के शिखर थे तक्षक...भारत ने अब तक मातृभूमि की रक्षा में प्राण न्योछावर करना सीखा था, आपने मातृभूमि के लिए प्राण लेना सिखा दिया। भारत युगों-युगों तक आपका आभारी रहेगा।"

इतिहास साक्षी है, इस युद्ध के बाद अगले तीन शताब्दियों तक अरबों की भारत

की तरफ आँख उठा कर देखने की हिम्मत नहीं हुई। तक्षक ने सिखाया कि मातृभूमि की रक्षा के लिए प्राण दिए ही नहीं, लिए भी जाते है, साथ ही ये भी सिखाया कि दुष्ट सिर्फ दुष्टता की ही भाषा जानता है, इसलिए उसके दुष्टतापूर्ण कुकृत्यों का प्रत्युत्तर उसे उसकी ही भाषा में देना चाहिए अन्यथा वो आपको कमजोर ही समझता रहेगा।

मनुस्मृति और नारी जाति

–डॉ विवेक आर्य

भारतीय समाज में एक नया प्रचलन देखने को मिल रहा है। इस प्रचलन को बढ़ावा देने वाले सोशल मीडिया में अपने आपको बहुत बड़े बुद्धिजीवी के रूप में दर्शाते हैं। सत्य यह है कि वे होते हैं कॉपी पेस्टिया शूरवीर। अब एक ऐसे ही शूरवीर ने कल लिख दिया मनु ने नारी जाति का अपमान किया है। मनुस्मृति में नारी के विषय में बहुत सारी अनर्गल बातें लिखी हैं। मैंने पूछा आपने कभी मनुस्मृति पुस्तक रूप में देखी है। वह इस प्रश्न का उत्तर देने के स्थान पर एक नया कॉपी पेस्ट उठा लाया। उसने लिखा–

"ढोल, गंवार, शूद्र, पशु, नारी, सकल ताड़ना के अधिकारी।"

मेरी जोर के हंसी निकल गई। मुझे मालूम था कॉपी पेस्टिया शूरवीर ने कभी मनुस्मृति को देखा तक नहीं है। मैंने उससे पूछा अच्छा यह बताओ। मनुस्मृति कौन सी भाषा में है? वह बोला ब्राह्मणों की मृत भाषा संस्कृत। मैंने पूछा अच्छा अब यह बताओ कि यह जो आपने लिखा यह किस भाषा में है। वह फिर चुप हो गया। फिर मैंने लिखा यह तुलसीदास की चौपाई है। जो संस्कृत भाषा में नहीं अपितु अवधी भाषा में है। इसका मनुस्मृति से कोई सम्बन्ध नहीं है। मगर कॉपी पेस्टिया शूरवीर मानने को तैयार नहीं था। फिर मैंने मनुस्मृति में नारी जाति के सम्बन्ध में जो प्रमाण दिए गए हैं, उन्हें लिखा। पाठकों के लिए वही प्रमाण लिख रहा हूँ। आपको भी कोई कॉपी पेस्टिया शूरवीर मिले तो उसका आप ज्ञानवर्धन अवश्य करना।

मनुस्मृति में नारी जाति–

यत्र नार्य्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः।
यत्रैतास्तु न पूज्यन्ते सर्वास्तत्रऽफलाः क्रियाः। –मनुस्मृति 3/56

अर्थात् जिस समाज या परिवार में स्त्रियों का सम्मान होता है, वहां देवता अर्थात् दिव्यगुण और सुख-समृद्धि निवास करते हैं और जहाँ इनका सम्मान नहीं होता, वहां अनादर करने वालों के सभी काम निष्फल हो जाते हैं।

पिता, भाई, पति या देवर को अपनी कन्या, बहन, स्त्री या भाभी को हमेशा यथायोग्य मधुर-भाषण, भोजन, वस्त्र, आभूषण आदि से प्रसन्न रखना चाहिए और उन्हें किसी भी प्रकार का क्लेश नहीं पहुंचने देना चाहिए। –मनुस्मृति 3/55

जिस कुल में स्त्रियां अपने पति के गलत आचरण, अत्याचार या व्यभिचार आदि दोषों से पीड़ित रहती हैं। वह कुल शीघ्र नाश को प्राप्त हो जाता है और जिस कुल में स्त्री-जन पुरुषों के उत्तम आचरणों से प्रसन्न रहती हैं, वह कुल

सर्वदा बढ़ता रहता है। -मनुस्मृति 3/57

जो पुरुष, अपनी पत्नी को प्रसन्न नहीं रखता, उसका पूरा परिवार ही अप्रसन्न और शोकग्रस्त रहता है और यदि पत्नी प्रसन्न है तो सारा परिवार प्रसन्न रहता है -मनुस्मृति 3/62

पुरुष और स्त्री एक-दूसरे के बिना अपूर्ण हैं, अत: साधारण से साधारण धर्मकार्य का अनुष्ठान भी पति-पत्नी दोनों को मिलकर करना चाहिए। -मनुस्मृति 9/96

ऐश्वर्य की कामना करने हारे मनुष्यों को योग्य है कि सत्कार और उत्सव के समयों में भूषण वस्त्र और भोजनादि से स्त्रियों का नित्यप्रति सत्कार करें। -मनुस्मृति

पुत्र-पुत्री एक समान। आजकल यह तथ्य हमें बहुत सुनने को मिलता है। मनु सबसे पहले वह संविधान निर्माता है जिन्होंने पुत्र-पुत्री की समानता को घोषित करके उसे वैधानिक रूप दिया है–"पुत्रेण दुहिता समा" (मनुस्मृति 9/130)। अर्थात् पुत्री पुत्र के समान होती है।

पुत्र-पुत्री को पैतृक सम्पत्ति में समान अधिकार मनु ने माना है। मनु के अनुसार पुत्री भी पुत्र के समान पैतृक संपत्ति में भागी है। यह प्रकरण मनुस्मृति के 9/130, 9/192 में वर्णित है।

आज समाज में बलात्कार, छेड़खानी आदि घटनाएं बहुत बढ़ गई हैं। मनु नारियों के प्रति किये अपराधों जैसे हत्या, अपहरण, बलात्कार आदि के लिए कठोर दंड, मृत्युदंड एवं देश निकाला आदि का प्रावधान करते हैं। सन्दर्भ -मनुस्मृति 8/323, 9/232, 8/342

नारियों के जीवन में आनेवाली प्रत्येक छोटी-बड़ी कठिनाई का ध्यान रखते हुए मनु ने उनके निराकरण हेतु स्पष्ट निर्देश दिये है।

पुरुषों को निर्देश है कि वे माता, पत्नी और पुत्री के साथ झगड़ा न करें। (मनुस्मृति 4/180)। इन पर मिथ्या दोषारोपण करनेवालों, इनको निर्दोष होते हुए त्यागनेवालों, पत्नी के प्रति वैवाहिक दायित्व न निभानेवालों के लिए दण्ड का विधान है। -मनुस्मृति 8/274, 389, 9/4

मनु की एक विशेषता और है, वह यह कि वे नारी की असुरक्षित तथा अमर्यादित स्वतन्त्रता के पक्षधर नहीं हैं और न उन बातों का समर्थन करते हैं जो परिणाम में अहितकर हैं। इसीलिए उन्होंने स्त्रियों को चेतावनी देते हुए सचेत किया है कि वे स्वयं को पिता, पति, पुत्र आदि की सुरक्षा से अलग न करें, क्योंकि एकाकी रहने से दो कुलों की निन्दा होने की आशंका रहती है (मनुस्मृति 5/149, 9/5-6)। इसका अर्थ यह कदापि नहीं है कि मनु स्त्रियों की स्वतन्त्रता के विरोधी हैं। इसका निहितार्थ यह है कि नारी की सर्वप्रथम सामाजिक आवश्यकता है सुरक्षा की। वह सुरक्षा उसे, चाहे शासन-कानून प्रदान करे अथवा कोई पुरुष या स्वयं का सामर्थ्य।

उपर्युक्त विश्लेषण से हमें यह स्पष्ट होता है कि मनुस्मृति की व्यवस्थाएं स्त्री विरोधी नहीं हैं। वे न्यायपूर्ण और पक्षपातरहित हैं। मनु ने कुछ भी ऐसा नहीं कहा जो निन्दा अथवा आपत्ति के योग्य है।

पुस्तक परिचय

शतपथ के पथिक (दो भागों में) : डॉ. विनोदचंद विद्यालंकार

आर्य समाज में स्वामी दयानंद जी के अनेकों अनुचर हुए है जिन्होंने वैदिक धर्म और आर्ष ग्रंथों के उत्थान में जीवन भर कार्य किया तथा कई क्रांतिकारी कार्य किये जैसे–स्वामी दर्शनानंद जी, स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी, पंडित लेखराम जी, पंडित चमूपति जी, नारायण स्वामी जी, युधिष्ठिर मीमांसक जी, उदयवीर शास्त्री जी, ब्रह्मदत्त जिज्ञासु जी, बुद्धदेव वेदालंकार जी, बुद्धदेव मीरपुरी जी, अमर स्वामी जी, रामचन्द्र देहलवी जी, गंगाप्रसाद उपाध्याय जी, मनीषी गुरुदत्त विद्यार्थी जी आदि प्रमुख है।

इन्हीं अनमोल कड़ियों में से एक कड़ी बुद्धदेव विद्यालंकार जी अर्थात् स्वामी समर्पणानन्द जी की है। इन्होंने शतपथ ब्राह्मण का भाष्य किया था जिसमें इनके द्वारा की गयी ऊहापोह बड़ी ही विलक्षण और ग्रन्थ के हिंसा, अश्लीलता परख लगने वाले आक्षेप रूपी कलंक का निवारण है।

स्वामी जी शतपथ ब्राह्मण ही नहीं विभिन्न जटिल विषयों, शंकाओं का सरल सुगम रीति और प्रमाणों से सुलझाने और समाधान करने में निपुण थे। स्वामीजी ने अनेकों विषयों पर लेख और गीता, वेदों के मन्त्रों का भाष्य भी किया।

इनका गीता भाष्य इस तरह का है जिसकी व्याख्या त्रेतवाद के सिद्धांत को बलवती करती है। प्रस्तुत पुस्तक में विभिन्न व्यक्तियों द्वारा लिखे गये स्वामी जी के जीवन चरित्र, वार्ता, शास्त्रार्थ, कार्यों का संकलन है।

स्वामी जी द्वारा लिखे गये विभिन्न विषयों पर निबन्धों, वेद व्याख्यानों का संकलन है जो कि अत्यंत ज्ञानवर्द्धक और कई ग्रंथों को समझने की कुंजी का कार्य करता है।

यदि आप विद्या के समुद्र में गोते लगाना चाहते हैं, यदि आप की शास्त्र ज्ञान में रुचि है तो इस ग्रन्थ को अवश्य मंगवा कर पढ़ें।

New Publications

Shri Satyanarainvrat Katha by *Swami Jagdishwaranand,* Translated by Pt. *Satyaprakash Beegoo, Mauritius* **Rs.30.00**

Aryoddeshya Ratna Mala, by Mah. Dayanand Saraswati, Translated by *Ach. Darshanand, USA* **Rs.30.00**

जुलाई २०१७ Registered with Regn. of News Paper for India
वेदप्रकाश R.No. 627/57 Regd. No. DL(DG-11)/8030/2015-17, U(DGPO) 01/2015-17

विद्यार्थी जीवन रहस्य : महात्मा नारायण स्वामी रु. 25.00

बालक, विद्यार्थी और युवक हमारे राष्ट्र की अपूर्व सम्पत्ति हैं। वे चरित्रवान्, सदाचारी, सुशील एवं सभ्य कैसे बनें? वे अपनी संस्कृति और सभ्यता के उपासक कैसे बनें? राष्ट्र-निष्ठा की भावना इनमें किस प्रकार पनपे? इन सभी प्रश्नों का उत्तर एक ही है कि बालकों को आरम्भ से उत्तम शिक्षा और वातावरण प्रदान किया जाए।

बालकों, विद्यार्थियों और युवकों को उनका कर्तव्य बोध कराने के लिए आर्यजगत् के तपःपूत संन्यासी म. नारायण स्वामी ने यह लघु पुस्तिका लिखी थी। इसमें श्रेणीबद्ध शिक्षा (Graded course) के ढंग से विद्यार्थी-जीवन के किस भाग में क्या करना चाहिए, निर्देश दिया गया है।

व्यायाम और आसनों के संबंध में अपने अनुभव के सिवा, अनेक योग्य डॉक्टरों की सम्मति लेकर भी यह निश्चय किया गया है कि किस आयु में कौन-सा आसन या व्यायाम उपयोगी होगा।

यह पुस्तक जीवन-सुधार में अत्यन्त उपयोगी सिद्ध होगी। माता-पिता और अध्यापक इस पुस्तक को विद्यार्थियों के हाथों में पहुँचाएं

मृत्यु रहस्य : महात्मा नारायण स्वामी रु. 20.00

पूज्यपाद म. नारायण स्वमी जी महाराज आर्य जगत् के मूर्धन्य विद्वान् संन्यासी थे। 'मृत्यु-रहस्य' उनकी एक अनुपम कृति है जो मनुष्य के मस्तिष्क को चिन्तन धारा में बहाने के लिए उपयोगी रचना है।

यह पुस्तक मानव मन की उलझी हुई गुत्थियों को सुलझाने का काम अति सरल ढंग से करती है। इसमें गहराई तक जाने वाले भावों को सुन्दर ढंग से अंकित किया गया है। 'मृत्यु-रहस्य' जैसे दार्शनिक विषय को सरस-सरल और रोचक ढंग से प्रस्तुत किया है।

स्वाध्याय प्रेमीजन श्री स्वामीजी महाराज की इस पुस्तक का रसास्वादन करके जहाँ आत्म-लाभ लेंगे वहीं सन्तप्त आत्माओं को भी शान्ति मिलेगी।

प्राप्ति स्थानः विजयकुमार गोविन्दराम हासानन्द
4408, नई सड़क, दिल्ली-6, दूरभाष 23977216, 65360255
Email: ajayarya16@gmail.com Web: www.vedicbooks.com